अबला नहीं समर्थ है नारी

समर्थ नारी गौरव

अदिति रुसिया

अबला नहीं समर्थ है नारी

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-20-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - अदिति रुसिया 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अबला नहीं समर्थ है नारी

जो लोग नारी को अबला समझते हैं, वो ये नहीं जानते कि, नारी अबला नहीं समर्थ है। नारी हर वो काम कर सकती है जो एक पुरुष करता है। नारी पुरुष से कंधे से कंधा मिला कर चल सकती है। हमेशा से ही नारी को कमजोर समझने वाले लोग ये भूल जाते हैं कि जिसने उन्हें जन्म दिया वो एक स्त्री ही है। जब पुरुष का जन्म स्त्री से होता है तो वो कमजोर कैसे हो सकती है? स्त्री सशक्त है। वो किसी पे निर्भर हो कर ज़िंदगी नहीं जीती। वो स्वयं में परिपूर्ण है। वो आत्मनिर्भर है। बस अंतर इतना है कि वो कभी अपना बल दिखाती नहीं। सही मायने में कहा जाए तो हर पुरुष स्त्री के बिना अधूरा है। वो कमाता है इसलिए सोचता है कि वो घर चला रहा है, जबकि ऐसा नहीं है। घर तो एक स्त्री एक नारी ही संचालित करती है। सिर्फ़ पैसा कामना ही मायने नहीं रखता। पैसा पुरुष कमाता है और घर नारी से चलता है। जिन घरों में स्त्रियाँ नहीं होगी वो घर बिल्कुल वैसा ही

होता है जैसे ज़मीन तो उपजाऊ है पर उस पर हल चलाने के लिए किसान नहीं!

बरसों से यही परम्परा रही है लोगों ने स्त्री को तुच्छ समझा है। उसकी कोई एहमियत नहीं समझी। जबकि वो स्वयं स्त्री के बिना कुछ नहीं। हमेशा से लड़कियों को बँधन में बाँध रखा गया। उन्हें आसमाँ छूने की आज़ादी नहीं। वो उड़ना चाहती हैं, ऊँची उड़ान भरना चाहती हैं पर उड़ने के पहले ही उनके पँख काट दिए जाते थे। उनकी आकांक्षाओं को, महत्वाकांक्षाओं को कुचल कर रख दिया जाता था। चाहे चौंका चूल्हा हो या देश के प्रति समर्पण या लड़ाई का मैदान या हिमालय की ऊँची चोटी नारी हर क्षेत्र में आगे है। हर क्षेत्र में नारी ने नाम कमाया है। देश का नाम रोशन किया है। घर और बाहर दोनों ही नारी अच्छी तरह संभालती है, दोनों में ही सामंजस्य बिठा कर कार्य करती है। फिर भी नारी को आबले कहा जाता है।

क्षमता

कभी किसी नारी की
क्षमता का आँकलन न करना
कभी करो तो उससे पहले
खुद को आँक लेना
क्या तुम उसके काबिल हो या नहीं
क्योंकि हर हाल में तुम सदा
उससे पीछे ही नज़र आओगे
कभी सोचा है
जिस नारी की क़ाबिलियत पर
करते हो सदा तानाकशी
वो नारी ही है
जो तुम्हारा हर पग पग पर
साथ निभाती है
वो नारी ही है जो सदा
तुम्हारी हर बात
बिना कहे समझ जाती है
सब कुछ सहकर

उफ़्फ़ तक न मुँह से निकालती है
सुबह भोर से लेकर
रात तक तुम्हारे हर काम
बिन चाहत करती जाती है
अपना सर्वस्व लूटा देती है
पर बदले में
कुछ नहीं चाहती है
निरंतर चलती रहती है
थकती नहीं
फिर भी सदा
उसकी क्षमता, क़ाबिलियत और योग्यता पर
प्रश्नचिन्ह ही लगाए!

हर स्त्री को अपने ऊपर लगे हुए इस अबला नारी के टैग को हटाना होगा। ये तभी सम्भव है जब वो स्वयं चाहे। नारी कमजोर नहीं होती, हाँ वो भावुक ज़रूर होती है। कोमल हृदय होता है उसका। अगर नारी न हो तो नर कहाँ से आएगा। उसे किस बात का घमंड है क्या वो नहीं जानता कि नारी से ही नर है, नारी जीवन आधार जैसे पानी के बिना मछली नहीं रह सकती, सूरज और चाँद के बिना दिन रात नहीं हो सकते, बादल के बिना बरसात नहीं हो सकती वैसे ही एक नारी के बिना घर गृहस्थी नहीं चल सकती।

कहते हैं अगर पिता न हो तो माँ अपने बच्चों को पाल लेती है। अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार, अच्छे कपड़े, सब कुछ देती है। बिना किसी तनाव के सब कष्ट सब कर बच्चों का पालन पोषण करती है। अच्छी परवरिश करती है। खुद को सबल बना कर रखती है। अबला या बेचारी का जीवन नहीं जीती शान से सर उठा कर जीती है। पर वहीं एक पिता अपनी पत्नी के जाने बादखुद को नहीं संभाल पाता। बच्चों के पालन पोषण के लिए उसे

हमेशा एक स्त्री की आवश्यकता होती। घर गृहस्थी वो अकेले नहीं चला पाता। उसे उसके लिए भी एक स्त्री की आवश्यकता होती है।

जब सब कुछ एक स्त्री अकेले कर सकती है तो वो अबला कैसे हो सकती है। उसे ज़रूरत है तो स्वयं को पहचानने की। उसे अपने अंदर की शक्ति को पहचानना होगा। उसे बताना होगा कि वो कमजोर नहीं। लोग नारी के आंसुओं को देख उसे कमजोरी का नाम देते हैं पर वो ये भूल जाते हैं कि वो किसी की याद में, किसी के दर्द को देख कर या अपनों को कष्ट में देख कर निकलते हैं। वो भावुक होती है। उसे सबकी चिंता फ़िकर होती है। कभी किसी ने सोचा है वो खुद कष्ट सह कर सबको खुश रहती है। अपनों की ख़ातिर कई बार बड़े से बड़े ज़ख़्म खुद सह जाती है पर अपने परिवार पर आँच तक नहीं आने देती।

एक स्त्री कोमल हृदय होती है। लोग उसकी भावनाओं के साथ खेलते हैं, पर ये नहीं जानते कि वो चुप होकर सिर्फ़ इसलिए सब कुछ सहती है ताकि परिवार

पर कोई आँच न आए। उसे लगता है उसके द्वारा उठाया गया एक कदम उसके परिवार का अहित न कर दे। बस यही सोच वो हर ज़ख़्म सहती है। वो अपने अपमान का घूँट पाई जी लेती है यह सोच कि अगर कुछ कह भी दिया तो क्या हुआ प्यार भी तो करते हैं। इसका मतलब लोग ये निकल लेते हैं कि नारी अबला है डरती है इसलिए कुछ कर नहीं सकती। वो ये भूल जाते है कि स्त्री कमजोर नहीं। सबसे अधिक मजबूर हृदय वाली होती जो किसी आँधी या तूफ़ान से डरती नहीं। कहते हैं न तूफ़ान आने के पहले शांति होती है,बस वो भी तूफ़ान के पहले की शती होती है। जब तक सह सकती है तब तक सहती है। फिर चण्डी बन उसका जवाब देती है

आज समय परिवर्तित हो गया है। पहले की लड़कियाँ सब कुछ चुपचाप सहती हैं इसलिए बेचारी कहलाती थी। उनका ग़लीचे भी कहना उन्हें मुश्किल में डाल देता था। आज हर लड़की स्वतंत्र है। वो अपने पैरों पर खड़ी है। पढ़ी लिखी है। बहनजी टाइप नहीं जीती। वो पुरुषों से कंधा से कंधा मिलकर चल रही है। अतिशयोक्ति

नहीं होगी अगर हम कहे की आज की नारी पुरुषों से आगे है। स्वाभिमान से सर ऊँचा कर जीती है। अपना कमाती है अपना खाती है नो किसी की मोहताज नहीं। हाँ ये बात और है की हमारे पुरुष प्रधान देश में नारी को हमेशा से तुच्छ ही समझा जाता है पर आज की लड़कियों ने इस बेचारी जैसे शब्द को अपने शब्दकोश से निकाल बाहर कर दिया।

आज वो हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी से खड़ी हैं। आज कल तो महिलाएँ ऑटोरिक्शा चला रहीं हैं और भी न जाने ऐसे कई कार्य जो लोग कहते थे फ़लाँ फ़लाँ काम तुम औरते नहीं कर सकती आज वो हर मुश्किल से मुश्किल काम कर रहीं हैं। महिलाएँ गृह उद्योग चला रही हैं। बड़े बड़े पदों पर आसीन हो कई कम्पनियों का संचालन भी कर रही हैं, फिर हम कैसे कह सकते हैं कि नारी अबला है। वो मूर्ख जो नारी को अबला कहते हैं क्योंकि, वो नारी है जिसने उन्हें नौ महीने पेट में रख जन्म दिया। बो दर्द सहा जो उसके जन्म के समय हुआ। अपनी ज़िंदगी ख़तरे में डाल दूसरा जन्म पाया वो नारी है।उसे तुम

अबला कैसे कह सकते हो। जूस तुम्हें अपने खून से सींचा। अरे वो तो महान है जिसने तुम्हारे लालन पालम के लिए अपना सारा जीवन, अपनी इच्छाओं की आहुति दे तुम्हें अच्छा इंसान बनाया और तुम कहते हो नारी अबला है।

एक माँ अपने बच्चों के लिए अपने सपने छोड़ देती है बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार देती है। उनके सपनों को अपना सपना बना जी लेती है। क्या एक पुरुष उस दर्द को समझ पाता है उसके दिल को कभी टटोलने की कोशिश कर पाता नहीं! क्योंकि वो ऐसा कर ही नहीं सकता। माना कि एक पुरुष घर का स्वामी होता है पर फिर भी घर तो महिला ही सम्भालती है। घर ही क्यों एक स्त्री के बिना तो घर सूना है क्योंकि वो हर रिश्ते दिल से निभाती है। वो सबला है। वो ही है जो घर बाहर दोनों सम्भालती है। चाहे कोई रिश्तेदारी हो या कोई सम्बंध निभाना हो वो उसे पूरे दिल से निभाती है। पुरुष पैसे कमा कर का देता है। पर उसका सही तरीक़े से

उपयोग नारी ही करती है। वो अपने घर को किस तरह चलाना है, बचत कैसे करना है बखूबी जानती है।

तिनका तिनका जोड़कर अपने बच्चों की, परिवार की इच्छाओं को पूरा करती है। खुद भूखी सो जाती है पर कभी ये नहीं जताती कि वो भूखी है। फिर नारी अबला कैसे?? खुद के बारे में कभी नहीं सोचती, हमेशा परिवार के लिए सोचती है। हर तीज त्यौहार चौके चूल्हे में बीत जाता है। कभी कोई अपने लिए ख्वाहिशें नहीं रखती। अगर पुरुष बाहर जाता है कमाने तो वो घर रहकर सारे काम करती है घर को सम्भालती है। चार दिवारी के मकान को घर और घर को मंदिर बनाती है। घर के हर सदस्य का ध्यान रखती है फिर भला कैसे अबला हो सकती है। बिन पैसों के चौबीस घंटे काम करती है। उसे तो एक दिन की छुट्टी भी नसीब नहीं होती। तो कहो नारी कैसे अबला हो सकती है। वो तो स्वयं ही शक्ति का रूप है। हर हाल में पूजनीय।

नारी पूजनीय है तो सबला ही हुई। नारी सबल है तभी शक्ति का स्वरूप मान पूजी जाती है। उसे भी

आत्मसम्मान जीना आता है। पहले स्त्रियाँ चुप रहती थीं, पर आज की हर लड़की अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ जाती है। जब पानी सर ऊपर होता है, अपना बचाव करना उसे आता है। अब वो स्वयं ही स्वयं की ढाल बन खड़ी रहती है। अब वो अपनी लड़ाई खुद लड़ती है। उसे किसी सहारे की ज़रूरत नहीं होती। पहले उन्हें किसी का आसरा चाहिए होता था पर अब उन्हें किसी आसरे की आवश्यकता नहीं। आज की हर नारी अकेले अपने दम पर सब कार्य करती है। नौकरी भी करती है घर चलाती है, बच्चों की परवरिश भी करती है। रिश्तेदारी भी निभाती है। नौ दुर्गा की तरह उसके भी कई हाथ है वो एक ही समय में अकेले हर कार्य करने में निपुण है। वो माँ भी है, बहन भी है, बेटी भी है, बहू भी है, सास भी, पत्नी भी, भाभी भी। वो एक समय में अपने सारे फ़र्ज़ निभाती है। कभी चूकती नहीं। कभी अपनी ज़िम्मेदारियों से पीछे नहीं हटती। हर रिश्ते बखूबी निभाती है। परिवार को बेलेंस कर जीती है तभी तो महान बन जाती है।

कहने तात्पर्य है कि, इतने सारे काम, हर फ़र्ज़, हर रिश्ते, हर क्षेत्र में हम अगर देखें तो नारी को अबला कैसे कह दें? वो हाल में हर क़ीमत में सबल है उसके जैसा न किसी पुरुष का विशाल हृदय है, न सहनशक्ति, न इतना संयम न ही इतना सामर्थ न सूझ बुझ से घर चलाने की कला। अरे जिसका आधार ही नारी है, जन्मदायिनी भी नारी है तो एक समर्थ व्यक्ति में ही ये सारे गुण होते हैं। इन सब गुणों से परिपूर्ण नारी है।हर मर्ज़ का इलाज इसके पास है। परिवार जोड़कर रखने की ताक़त खुद जलकर परिवार को रोशन करने की ताक़त रखती है। इसीलिए तो अबला नही समर्थ है नारी। जब अपने पर आ जाए तो दिन में तारे दिखाने का दम रखती है नारी।

स्वाभिमान

स्वाभिमान क्या सिर्फ़ पुरुषों में ही होता
क्या स्त्री का कोई स्वाभिमान नहीं
क्यों स्त्री सिर्फ़ पुरुषों के इशारे पर चले
ऐसा सोचते हैं हर पुरुष
क्यों हर वो बात माने वो उनकी
जिस बात को मानने दिल गवारा नहीं
क्यों उनके हर हुक्म का करे पालन
क्यों वो जो बोलते हैं
उसे चुपचाप सुने वो
क्यों गलती करने पर भी
नहीं स्वीकारते पुरुष अपनी ग़लतियाँ
हर बात की माफ़ी नहीं होती
क्षमा करना हर स्त्री का स्वभाव है
पर कब तक
सहनशक्ति से बाहर
जब हो जाती हैं बातें
होती हदें पार तो
क्षमा भी नहीं कर पाती स्त्री
फिर चाहे वो उसका हो प्यार
क्योंकि उसका जाग जाता है स्वाभिमान
सहन करने की भी एक सीमा होती है
हर बात पर माफ़ करना

शायद यही
एक स्त्री की कमजोरी होती है
पर ये समझना भी मूर्खता है कि
स्त्री कमजोर होती है
क्योंकि अगर उसकी ताक़त
पुरुष के साथ न हो
तो वो अधूरा है
स्त्री चाहे कोई भी हो
माँ बहन बेटी पत्नी या प्रेमिका
हमेशा शक्ति होती है पुरुषों की
शिव भी शक्ति के बिना अधूरे हैं
राम सीता के बिना
कृष्ण राधा के बिना
विष्णु लक्ष्मी के बिना
ऐसे है हर नारी
शक्ति बन खड़ी रहती है साथ पुरुषों के
मत दुखाओ उसका दिल
मत खेलो उसकी
कोमल भावनाओं से
करो सदा उसका सम्मान

अदिति रुसिया,
वारासिवनी

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अदिति रुसिया
वारासिवनी

मौन: एक स्त्री की जुबानी

स्त्री हूँ
इसलिए मौन की
परिभाषा बखूबी जानती हूँ
एक स्त्री जब तक जुल्म सहती है
जब तक चुप रहती है
सब्र का इम्तिहान न लेना कभी
ये जो टूट गया कहर ढा जाएगा
हो जाएगा चूर चूर हर शक्स का घमंड
डूब जाएगी सारी धरा अश्रु से
एक स्त्री के देह से यूँ न खेलना
न ढाना सितम उस पर
ये मत भूलना कभी
नारी सब पर भारी
चण्डी गर बन गई
वार न जाए फिर उसका खाली
प्यार की मूरत है दया का सागर है स्त्री
कहीं चण्डी दुर्गा काली भी है स्त्री
माँ बन दुलारती है बच्चों को
कही दुर्गा बन संहार करती है
दानव का
दोनों ही रुप में खूब सजती है
जब तक खामोश है अच्छी लगती है
जब बोलती है
अच्छे अच्छों को बक्शती नहीं स्त्री।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था - 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/-
978-93-90995-20-2